रिकॉड़ः - दूर देश का रहने वाला··· ओम शान्तिः प्रातः क्लास 15-6-67

आज है वृक्षपति वार। उसके नाम रख दिया है वृक्षपत। वो तो त्योहार आद वर्ष-2 मनाते है। तुम तो हर हफ्तेग वृक्षपतडे मनाते हो। वृक्षपति अर्थात इस मनुष्य सृष्टी रुपी झाड का जो बीज रुप है चैतन्य है वो ही इस झाड की आदि मध्य अन्त को जानते है। और जो भी वृक्ष है वो सब जड होते है। यह सब है चैतन्य इनको कहा जाता है कल्प वृक्ष। इनकी आयु है 5000 हजार वर्ष। और यह वृक्ष चार भागो मे है। हर चीज चार भागो में होती है। यह दुनियां भी चार भागों मैं है। यह भी इस समय तुम बच्चे ही जानते हो। और कोई भी मनुष्य नही जानते। अभी इस पुरानी दुनियां का अन्त है। दुनियां कितनी बडी है। यह ज्ञान कोई भी मनुष्य मात्र की बुधी मे है नही। यह है नई दुनियां के लिय नई शिक्षा। और फिर नई दुनियां का राजा बनने के लिये। अथवा आदी सनातन देवी देवता धर्म के बनने लिये। शिक्षा भी नई है। भाषा तो वो ही हिन्दी है। बाबा ने समझाया है जब दुसरी राजाई स्थापन होती है तो उनकी भाषा ही अलग होती है। सतयुग मे क्या भाषा होगी? सो बच्चे थोडा-2 जानते है। आगे बच्चियां ध्यान मे जाकर बताती थी। वहां कोई संस्कृत नही है। संस्कृत तो यहां है। जो यहां पर है वो फिर वहां नही हो सकती। तो बच्चे जानते है कि यह है वृक्षपति। उनको फादर रचता भी कहते है। रचता है झाड का। यह है चैतन्य। बीज रुप। वो सब होते है जड बच्चों को सृष्टी की आदि मध्य अन्त को भी जानना चाहिय नां। जनावर तो नही जानेंगे। मनुष्य होकर यह नही जानते तो तब तक कि हू-बहू जैसे कि जनावर से भी बदतर। 5 विकार भी है। और कोई इस समय सुख नही है। नालेज नही होने कारण मनुष्यों को सुख नही है। यह है बेहद की नालेज। जिससे ही बेहद का सुख होता है। हद की नालेज को कांग विष्ठा समान सुख कहा जाता है। तुम जानते हो हम बेहद के सुख के लिये अभी पुरुषार्थ कर रहे है फिर से। यह फिर से अक्षर सिर्फ तुम्ही सुनते हो। तुम्ही फिर से मनुष्य से देवता बनने वो ही राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। यह भी तुम जानते हो ज्ञान का सागर बाप निराकार है। निराकार सभी आत्मायें है। सबको अपना-2 शरीर है। इनका आलौकिक जन्म कहा जाता है। और कोई मनुष्य ऐसा जन्म ले नही सकते है। जैसे कि वो लेते है। और इनकी भी वानप्रस्थ अवस्था मे प्रवेश करते है। बच्चो को सम्मुख बैठ कर समझाते है। और कोई बच्चे-2 कह नही सकते। कोई भी धर्म वाला हो जानते हो शिव बाबा है। वो तो जरुर बच्चे-2 ही कहेंगे। बाकी कोई भी मनुष्य को ईश्वर नही कह सकते है। यों तो गांधी जी को भी बापू कहते थे। म्यूनिसपालिटी के मेयर को भी फादर कह देते है। परन्तु वो फादर है सिर्फ सब देहधारी। तुम जानते हो हमारी आत्माओं का बाप हमको पढाते है। बाप बार-2 कहते है अपने को आत्मा समझो। वो बाप आकर पढाते भी है। यह है ईश्वरिय कुटम्ब। बाप के कितने सारे बच्चे है। तुम भी कहते हो बाबा हम तो आपके है। तो बच्चे हो गयें नां। कहते बाबा हम एक रोज का बच्चा हूं आठ रोज का बच्चा हूं। मास का बच्चा हूं, पहले तो जरुर छोटा ही होगा। भल दो चार दिन का छोटा बच्चा ही हो। परन्तु आर्गन्स तो बडे है नां। इसलिय सब बच्चो को पढाई चाहिये। जो भी आते है सबको बाप पढाते है। तुम भी पढते हो। बाप के बच्चे बने फिर बाप समझाते है? तुमने कैसे 84 जन्म लिये है? बाप कहते है मै भी बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त मे इनमे प्रवेश करता हूं फिर पढाता हूं। बच्चे जानते है कि यहां हम बडे ते बडे टीचर के पास आये है। जिससे ही फिर यह टीचर्स निकले है। जिनको पण्डे कहते है। वो भी सबको पढाते रहते है। जो-2 जानते जावेंगे तुम पढाते रहेंगे। पहले-2 तो समझाना ही यह है कि दो बाप है। एक लौकिक और दुसरा पारलौकिक। बडा तो जरुर पारलौकिक बाप हो गया नां। जिनको ही भगवान कहा जाता है। तुम जानते हो अभी हमको पारलौकिक बाप मिला है। और किसी को पता नही है। धीरे-2 जानते ही जावेंगे। अभी तुम बच्चे समझते हो कि हम आत्माओं को बाप पढाते

है। हम आत्मायें ही एक शरीर छोड कर दुसरा लेते हैं। ऊंच ते ऊंच देवता बन जावेंगें। ऊंच ते ऊंच पढाने वाले की ऊंच ते ऊच शिक्षा है। हम ऊंच ते ऊंच बनने लिये आये है। यह भी हो सकता है। कि कोई को किसी बाते मे संशय आने पर पढाई को छोड देवें। ऐसे छोड़ देते है। एक तो संशय मे आकर छोड देते है दुसरा फिर माया के तूफान सहन नही कर पाते है। हार खा लेते है। हार खाते है काम रुपी महा, शत्रु से। इसके कारण ही बच्चो को कितना सहनकरना पड़ता है। बाप कहते है कल्प-2 तुम अबलाओं माताओं की ही पुकार होती है। कहते है बाबा हमको नग्न होने से बचाओं। बाप कहते है याद के बिना और कोई रास्ता नही है। याद से ही बल आता जावेगा। माया बलवान की ताकत कम होती जावेगी। फिर तुम छूट जावेंगें। ऐसे भी बहुत बन्धने होते है जो छूट कर आते है। फिर अत्याचार होना बन्द हो जाता है। फिर आकर शिव बाबा से ब्रहमा दवारा बातचीत करते है। यह भी टेव पड़ जानी चाहिये। बुधी मे यही रहना चाहिये कि हम शिव बाबा पास जाते है। वो इस ब्रहमा तन मे आते है। हम शिव बाबा के आगे बैठे है। याद से ही विकर्म विनाश होगें। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यही शिक्षा मिलती है। बाप से मिलने आओ तब भी अपने को आत्मा समझो। आत्म अभिमनी भव। यह ज्ञान तुमको सब अभी मिलता है। यही है मेहनत। उस भक्ति मार्ग मे तो कितने वेदशास्त्रपढ़ते है। यह तो एक ही मेहनत है सिर्फ याद की। यह बहुत सहज ते सहज है। बहुत डिफीकलट ते डिफरकल्ट है। बाप को याद करना इसेस सेहज बातकोई है नही। बच्चा पैदा और हुआ और मुख से बाबा, बाबा निकेलगा। बच्ची के मुख सेमां-मां निकलेगा। आत्मा ने फींमेल का शरीर लिया तो फीमेलके पा ही जसवेगा। क्योकि वो उसको दुध पिलाती है। बच्चे अकसर करके बाप को याद करते है। क्योकि वर्सा मिलता है। अभी तुम आत्मायें तो सब बच्चे हो। तुमको वर्सा मिलता है बाप से। आत्मा को वर्सा मिलता है बाप को यादकरने पर। देहअभिमानी होगें तो वर्सा पाने मे मुशकलात होगी। बाप कहते है मै बच्चों को ही पढ़ाता हूं। बच्चे भी जानते है कि हमको विश्व का बाप पढाते है। यह बाते बाप के बिना कोई समझा नही सकते। उनके साथ ही भक्ति मार्ग मे भी तुम्हारा प्यारथा। तुम सभी आशीक थे उस मशूक के। सारी दुनियां आशिक है एक माशूक की। परमात्मा को सब परमपिता भी कहते है। बाप को माशूक नही कहा जाता है। तुम समझते हो कि तुम भक्ति मार्ग में आशिक थे। अभी भी है बहुत। परन्तु परमात्मा किनको कहा जावे इसमे बडी मूंझ होतीहै। अपने को मनुष्य परमात्मा कह देते हैं को हनुमान को भी परमात्मा कह देते है। एकदम ही सुट मूंझा हुआ है। सिवाय एक के कोई ठीक कर नही सकते। कोई की ताकत नही। बाप ही आकर बच्चो को समझाते है। बच्चे फिर नम्बरवार पुरषार्थ अनुसार समझते है। और समझाने के लायक बनते है। राजधानी स्थापन हो रही है हूबहू कल्प पहले मिसल। तुम यहां पढते हो। फिर प्रारब्ध नई दुनियां में पावेंगें। तुम काल पर विजय पाते हो। वहां कब अकाले मृत्यु होती ही नही है। नाम ही है स्वर्ग। तुम बच्चो को तो इस पढाई मे बहुत खुशी होनी चाहिये। बार-2 अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप की याद से बाप की प्रापर्टी भी याद आवेगी। सेकिंड में सारे ड्रामा का ज्ञान बुधी मे आ जावेगा। मूल स्थूल सूक्ष्म वतन। 84का चक्र। बस। बाकी क्या है। यह तो सारा नाटक भारत पर ही बना हुआ है। बाकी तो सभी है बाईप्लाटस। नाटक मे सब बाइप्लाटस भी होते है नां। रमत-गमत के लिये। बाप नालेज भी तुमको सुनाते है। तुम्ही ऊंचफिर नीचे ते नीच बनते हो। डबलसिरताज धारी राव और अब फिर बिलकुल ही रंक। अभी तो भारत रंक फिखारी है। भारत की गवर्मेन्ट का क्या हाल है। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। इसको ही तो पांचायती राज्य कहा जाता है। सतयुग मे था डबल सिरताज धारी महाराजा तथा महारानी का राज्य। तुम्हारी बुधी मे अब आ गया है कि हम कैसे राज्य करते है। कैसे 84जन्म लेते है। तो जो ब्राहमण बनते है प्रजापिता ब्रहमा की औलाद तो सब हो गये सब मानते

सब मानते है आदी देव ब्रहमा को। नाम बहुत रख दिये है। महावीर भी इनको ही कहते है। महावीर बन्दर को भी कहते है। अब शास्त्रोमे तो दण्ड कथोय है। वास्तव मे वो सब है तुम्हारे पर। तुमको तो इतना योग मे रहना चाहिये कि माया के तूफान कितने भी आवे परन्तु तुम हिलो नही। इतने महावीर बनने है। महावीर के बच्चे भी महावीर। क्योकि तुम माया पर जीत पाते हो। एक के धनुष की बात नही है। तुम हर एक को धनुष तोडना है अर्थात माया पर जीत पानी है। इसमे लडाई आद की कोई बात नही। यह सब बच्चे जानते है कि योरपवासी कैसे लड़ते है। भारत ही मे कौरवो पाण्डवो की लडाई है। उन्होने फिर यादवो की बदली पाण्डव लिख दिया है। तुम देखते भी हो कि यादव कौरव मिक्सहुयक पडे है। गाया भी जाता है कि खून की नदियां बहेगी। विष्णु को क्षीर सागर मे दिखवाते है। ल-न है पारस नाथ। उनका फिर जपान तरफ पशेपतिनाथ कहा जाता है। विष्णु का दो रूप पारस नाथ पारस नाथिनी। वो पशेनाथ पति। उसमे विष्णु का चित्र बनाते है। लेक भी बनाते है। लेक मे अब क्षीर कहां सैं आया। बडे दिन में उस लेक मे दूध डालते है। फिर दिखवाते है कि क्षीर सागर मे विष्णु सोया हुआ है। अर्थ तो कुछ भी नही है। चार भुजाओं वाला मनुष्य ही कोई होता नही। अब तुम बच्चे शोशल वर्कर हो। रूहानी बाप के बच्चे हो नों। बाप तो सब बाते समझाते है। इसमे तो कब भी कोई संशय नही आना चाहिये। संशय माना ही माया का तूफान। तुम हमको बुलाते ही हो कि हे पतित पावन आओं। आकर हमको पावन बनाओं। यह तो पतित दुनियां है नां। पावन बनाने वाला एक ही बाप है। वो कहते है कि मामेकम याद करो तो पावनबन जावेंगें। 84के चक्र को याद करना है। बाप को कहा जाता है पतित पावन। ज्ञान का सागर। दो चीज हो गई। पतितो को पावन बनाते है और 84के चक्र का ज्ञान देते है। यह भी तुम्ही बच्चे जानते हो कि 84का चक्र फिरता ही रहेगा। उनका ऐंड नही है। यह भी तुम्ही जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। उनको पतियों का पति भी कहते है। अब बाप कहते है मेरे दवारा तुम बच्चो को वर्सा बडा भारी मिनता है। परन्तु ऐसे मुझ बाप को भी फारकती देके देते है। यह भी ड्रामा में नूंध है। पढाई को ही छोड देते है। कितने मूर्ख है। तब बाप कहते है कि मूर्ख ते मूर्ख सारी दुनियां भर मे देखना हो तो यहां आकर देखो। और अक्लमन्द भी देखना हो तो यहां आकर देखो। अक्लमन्द उनको कहा जाता जो पढ कर और फिर जल्दी ही पढाने लग पढते है। उस पढाई से क्या मिलता है। इस पढाई से क्या मिलता है। फिर क्या पढना चाहिये? बाबा बच्चो को सैं पूछते है। समझाते भी है कि यह पढाई बहुत अच्छ है। फिर भी कहते है क्या करें। जिस्मानी पढाई नही पढेंगें तो मित्र सम्बन्धी आद नाराज होगें। बाप कहते है दिन प्रति दिन समय थोडा होता जाता है। इतनी पढाई तो पढ नही सकेंगें। बडी जोर दार तैयारियां हो रही है। हर प्रकार से तैयार होते रहते है। दिन प्रति दिन एक दो मे दुश्मनी बढ़ती जाती है। कहते भी है ऐसी-2 बीजे है तो जो फट से कोई को भी खलास कर देवें। वो कहते है कि अगर हम भी इसमे मदद देते थे तो यह लडाई बडी जोर सैं लग जाती थी। और तुम बच्चे जानते हो कि अभी ड्रामा अनुसार वो लडाई लग नही सकती। राजाई स्थापन होनी है। तब तक हम भी तैयारी करते रहे। वो भी तैयारी करते रहते है। तुम्हारा अभी तो बहुत प्रभाव निकलने का है। गाया भी जाता है अहो प्रभु तेरी लीला·· ·यह इसी समय का गायन है। यह भी गाया हुआ है तुम्हारी गत मत न्यारी···· सब आत्माओं का पार्ट न्यारा है। अब बाप तुमको श्रीमत दे रहे है कि मामेकम याद करो तो विकर्म विनाश होगें। मनुष्यों की मत अब कहती है कि गंगा पतित पावनी है। उसमे स्नान करने पर हम पावन बन जावेंगें। कितने गोते मारते रहते है। कई भोले होते है तो जो कुछ सन्यासी कहते है वो ही मान लेते है। कितने धक्के खिलाते है। अनेक ढेर के ढेर गुरु है। अब बाप तो कहते है कि मामेकम याद करो। अब वापस चलना है। वहां सें फिर

पॅाट बजाने आना है।पहले सतोप्रधान फिर सतो रजो तमो मे पॅाट बजाते है। इस समय सारा झाड ही पुराना है।जैसे बड़ का झाडहोता है। उसका थुर रवत्म हो गया है बाकी सारा झाड रवडा है। उनका ही मिसाल देते है। अभी एक आदी सनातन देवी देवता धर्म है नही। बाकी सब है। अब फिर से आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। बाकी सब विनाश हो जाना है। तुम जानते हो कि हमी राज्य करते थे। और कोई धर्म नही था। हम ही विश्व का मालिक बने थे। विश्व मे शान्ति सिवाय परमपिता परमात्मा के कोई कर नही सकते। परमपिता परमात्मा ही कर रहे है। 100% पवित्रता सुरव शान्ति ड्रामा प्लान अनुसार अब भी स्थापन कर रहे है। कैसे?सो ही समझो। विश्व मे शान्ति कोई मनुष्य तो कर नही सकते। तुम बच्चे भी बाप का मददगार बनते हो। जो बहुत मदद करेंगे वो मालर का दाना बन जावेंगे। तुम बच्चो को तो नाम भी कितने रमणीक मिले है। वो नामो की लिस्ट भीआलबम्ब मे रव देनी चाहिये। कितने रमणीक नाम थे। तुम भठी मे थे नां। घर बार छोड कर बाप के आकर बने। एकदम भठी मे आकर पड़े। ऐसी पक्की भटी थी जो अन्दर मे कोई बाहर का आ नही सकते थे। जब कि बाप का बन गये तो फिर नाम नया होने चाहिये। सब कुछ सरण्डर कर दिया। इसलिये ही नाम रव दिये। वण्डर हुआ नां। लिस्ट भी संदेशी को मिली।बाबा ने नाम रव दिये। तुम ब्राह्मणों की मालर तो बन नही सकती। बाबा तो जवाहरी था नां। जानते है कि मोतियों की माला कैसे बनती है। रुद्राक्ष की भी माला बनती है। उसमे फ्रन्ट मे बडे मोती फिर छोटे-2 पिछाडी तक हो जाते है। वो तो देरवने मे भी नही आते है। फूलो को तो बडे-2 छोटे सभी नमन करते है। बाप है नां। अब बाप भी बच्चो को नमस्ते करते है। बच्चे बाप को करते है। यह भी एक नम्रता है। नमस्ते बाबा। नमस्ते बच्चो। इसमे भी बडा अर्थ है।बाकी तो सबमे है ही अनर्थ। भक्ति मार्ग मे है अनर्थ। तभी तो तमोप्रधान बन गये हो नां। अभी तुम माला उठा कर राम-2 नही करेंगे। बाप स्वयं अपनी रुद्र माला बना रहे है। आज भोग है। यह है सुहावना संगमयुग। पियर घर ससुर घर वाले आपस मे मिलते है। यह बडी रमणीक बाते है। बाप को और चक्र को याद करो। सो भी चुप। कोई भी आवाज नही। सिर्फ चुप ही रहते रहो तो उदास ही हो ज= जाओ।इसलिये ही बीच-2 मे यह रमणीकता है। अब तुम जानते हो कि कैसे हमने राजभाग लिया और गंवाया है। जो वापस ले गये है उनसे ही फिर वापस आ रहे है। क्रिश्चियनस लोग पास धन बहुत है। कृष्ण के पास भी धन बहुत। तो उनका दोनो का ड्रामा मे पॅाट जैसे कि लेन देन का है। देते भी है तो लेते भी है। बहुत मदद मिलती है भारत को। नही तो भूरवा मरना पड़े। अभी भी देरवो तो अनाज की कितनी तंगी है। क्या मिलता है। यहां तो तुम्हारी हर एक से हर एक चीज नम्बरवन होती है। यहां पर ही ऐसी-2 चीजे है तो विचार करो= कि सतयुग मे क्या-2 नही होगा। तो ऐसी बादशाही लेने लिये पुरुषार्थ करना पडे नां। कुछ भी तकलीफ नही सिर्फ बाप को याद करना है। अब 84का चक्र पुरा हुआ है चलना है अपने घर।गुड मार्निंग वा नमस्ते

रही हुई पुआईन्ट:— आरवरीन अन्त मे है तुम कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। यह भी ड्रामा मे नूंध है।
** *** ******
फिर भी पुरुषार्थ करवाया जाता है। बाप को याद करो। बेराबर यही महाभारत लडाई भी है। सभी रवत्म हो जावेंगे। बाकी तो भारतवासी ही रहेंगे। फिर तुम विश्व पर राज्य करते हो। अभी बाप तुमको पढाने आये है। वो ही ज्ञान का सागर है। यह भी रवेल है। इसमे मोझने की बात ही नही है। माया तूफान मे लावेगी। बाप समझाते है कि इनसे डरो मत।बहुत गन्दे-2 संकल्प आवेंगे। वो भी तब जब कि बाबा की गोद लेंगे।जब तक कि गोद ही नही ली है तो माया इतना नही लडेगी। गोद लेने बाद ही तूफान लगते है। इसलिये बाबा कहते है कि गोद भी संभाल कर लेनी है। कमजोर है तो इससे तो प्रजा मे राजाई पद पाना अच्छा है। नही तो दास दासियां बनना पडेगा। यहां तो सूर्यवंशी चन्द्र वंशी राजधानी स्थापन हो रही है। अच्छा-2 मीठे-2 बच्चो को बाप दादा अब सलाम मालेकम करते है। विदाई